पशुओं में पुनः-पुनः गर्भाधान (रिपीट ब्रीडर) की समस्या से निजात कैसे पायें

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ. प्र.)

गर्भ क्यों नहीं ठहरता

साधारणतः हर एक गाय/भैंस में ब्याने के 50 से 70 दिन के बीच नियमित रूप से मदचक्र शुरू होना चाहिए। इस समय पशु में गरम होने के लक्षण स्पश्ट होते हैं तथा अच्छे सांड से मिलाने पर या कृत्रिम गर्भाधान विधि द्वारा सफलतापूर्वक गाभिन कराया जा सकता है। जब पशु गाभिन हो जाता है तो सामान्यतः 20–22 दिन बाद गरम होने के लक्षण दिखना बन्द हो जाते हैं लेकिन कुछ पशु गाभिन होने के बावजूद मदचक्र के लक्षण दिखाते हैं, पशु चिकित्सक ही इस पशु को जॉच द्वारा सही स्थिति बता सकते हैं। पशु के गर्भ न ठहरने पर जब गाय/भैंस 20–22 दिन के अन्तर पर प्रत्येक बार गरम होने के लक्षण दिखाती है और प्रत्येक बार गर्भाधान का प्रयास करने पर भी गाभिन नहीं हो पाती, तब इस तरह के पशु को ''रिपीट ब्रीडर'' पशु कहा जाता है जिसके लिए समुचित चिकित्सा और देखभाल की आवश्यकता होती है। पशुपालकों को चाहिए कि इस तरह के पशुओं को अपने अन्य पशुओं से अलग रखें तथा इलाज यथाशीघ्र किसी पशुचिकित्सक से करायें।

रिपीट ब्रीडर पशु में कोई स्पश्ट या विशेश बीमारी के लक्षण नहीं दिखाई पड़ते। केवल एक ही महत्वपूर्ण बात सामने आती है कि पशु को हरेक 20–22 दिन के बाद गरम होना और गाभिन कराने के बाद भी गर्भ नहीं ठहरता है। पशु देखने में स्वस्थ रहकर दूध भी देता है। दूध की मात्रा ब्यांत के बाद समय बढ़ने के साथ क्रमशः कम हो जाती है, पशु के खाने पीने में भी कोई कमी नहीं दिखाई देती है और कोई अन्य कष्ट या परेशानी भी नही होती है।

कारण एवं निवारण

पशु के गर्भ न ठहरने के अनेक कारण होते हैं जिनमें कुछ निम्न हैः–

1. पशु के बच्चा पैदा करते समय उसके जननांगों में विभिन्न प्रकार के संक्रामक कीटाणु प्रभाव डाल सकते हैं।

❖ ब्यांत काल के समय पशु की बच्चेदानी का मुँह खुलकर काफी बड़ा हो जाता है। अतः किसी भी संक्रामक रोग के कीटाणु के प्रवेश की संभावना बढ़ जाती है, खासकर जब किसी ग्वाले, मजदूर या अनजान व्यक्ति द्वारा पशु के बच्चे को खींचकर निकलवाया जाता है। जब ब्याने के बाद पशु की उचित देखभाल नहीं हो पाती तब भी अनेक रोगों का प्रकोप हो जाता है। अगर पशु ने ब्याने के समय से 60 से 70 दिन तक गरम होने के कोई लक्षण नहीं दिखाये हैं तो तुरन्त निकट के पशु चिकित्सक द्वारा पशु की जॉच करा कर उचित इलाज कराना चाहिए।

❖ यदि पशु के बच्चा पैदा करते समय कोई समस्या/कठिनाई हो रही होती है या बच्चा बाहर नहीं आ पा रहा हो तो पशु के जननांगों के मार्ग से अनेक संक्रामक कीटाणु प्रवेश कर जाने का भय रहता है ऐसे समय विशेश सावधानी की जरूरत होती है। इसके लिए आवश्यक साफ–सफाई रखना जरूरी होता है। किसी ग्वाले, मजदूर या किसान की सहायता लेकर पशुपालक पशु के लिए खतरा बढ़ा देते हैं क्योंकि इन लोगों को सावधानी रखने योग्य बातों के बारे में बहुत कम मालूम रहता है।

❖ सामान्यतः गाय/भैंस के बच्चा पैदा होने के 10–12 घण्टे के भीतर अपरा या जेर जो कि बारीक झिल्ली होती हैं, जननांग के रास्ते बाहर आ जाती है। कभी–कभी यह 24–48 घण्टे या अधिक समय के बाद भी बाहर नहीं गिरती। अपने आप ना गिरने की दशा में बच्चेदानी में अनेक संक्रामक कीटाणु पहुँच जाते हैं। अपरा के सड़ने – गलने से खून के कतरे जमा होने से भी बच्चेदानी में काफी मैल व गंधदार रंगीन पानी जमा हो जाने से पशु को बुखार हो जाना, दूध कम होना, सुस्त हो जाना आदि लक्षण देखने को मिलते हैं।

यदि जेर निकालने के लिए मजदूर/किसान या ग्वाले जैसे अनजान व्यक्ति की सहायता ली जाती है तो आवश्यक सावधानी व सफाई न रखने से पशु में बीमारी बढ़ने की संभावना रहती है अतः अपरा रूक

जाने पर उसे निकालने के लिए पशु चिकित्सक की सहायता व इलाज ही सर्वश्रेश्ठ है।

❖ कभी–2 गाय/भैंस का गर्भकाल पूरा होने से पहले ही बच्चा पैदा हो जाता है। ऐसी स्थिति में अपरा बच्चेदानी में ही रहकर सड़ जाती है व अनेक संक्रामक कीटाणु खून में होकर शरीर के अन्य भागों में प्रकोप बढाकर पशु के जीवन को खतरा बढ़ा देते हैं। इस दशा में निकट के पशु चिकित्सक से जल्दी से जल्दी जॉच कराकर उचित इलाज कराना जरूरी होता है अन्यथा पशु के रिपीट ब्रीडर हो जाने की संभावना बढ़ जाती है।

❖ कभी–कभी गर्भावस्था काल के बीच में अनेक कारणों से गर्भ बच्चेदानी में ही मर जाता है जिससे अनेक घातक पदार्थ पशु के शरीर में फैलकर उसके जीवन को खतरे में डाल सकते हैं। ऐसा शक होने पर जल्दी से जल्दी किसी पशुचिकित्सक से जॉच कराके उचित चिकित्सा कराना आवश्यक होता है।

❖ पशु को जिस स्थान पर बच्चे को जन्म देने के लिए रखा गया है उस स्थान की सफाई, स्वच्छता के द्वारा पशु के जननांगों के द्वारा फैलने वाले रोगों पर नियंत्रण संभव हैं। अतः इस कार्य के लिए पशु को खुली, हवादार स्थान में जमीन पर कंकड पत्थर रहित तथा घास या पक्के फर्श पर भूसा फैला कर बांधना लाभप्रद होता है।

❖ पशु जननांगों से संबधित विशेश जीवाणु जैसे – ब्रुसेला ट्राईकोमोनास, लिस्टीरिया, केम्पाईलोबैक्टर (बिब्रियो) आदि संक्रामक रोगो से ग्रस्त पशु में भी गर्भ नहीं ठहरता है। इसके संबन्ध में पशु चिकित्सक से परामर्श व चिकित्सा आवश्यक है।

2. संतुलित आहार मुख्यतः प्रोटीन, खनिज लवण तथा विटामिन्स की कमी के कारण भी दुधारू पशुओं में गर्भ नहीं ठहरता है। इसलिए उचित मात्रा में इन सभी तत्वों का पशु आहार में होना बहुत जरूरी है। अगर दुधारू पशुओं के दाने में 50 ग्राम खनिज लवण (मिनरल मिक्सचर)

रोजाना दिया जाये तो इस कमी को दूर किया जा सकता है। प्रत्येक खनिज लवण तथा विटामिन की कमी के कुछ लक्षण होते हैं और इस संबन्ध में पशुचिकित्सक से सलाह लेनी चाहिए।

3. गाभिन पशु की उचित देखभाल न करना भी पशु में गर्भ न ठहरने का एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है।
4. कभी–कभी पशुओं के अण्डाशय में कमी अथवा हारमोन्स की कमी के कारण भी गर्भ नहीं ठहर पाता है, ऐसे कारणों का संदेह होने पर पशु चिकित्सक की सलाह लेकर जॉच व इलाज करा लेना चाहिए।
5. जब गाय/भैंस में गर्मी के लक्षण समय से नहीं देखें जाते हैं तब भी उनका गाभिन करवाना उचित समय पर सम्भव नहीं हो पाता है। अतः अगर गाय / भैंस सुबह गर्मी में दिखाई दे ंतो उसी दिन सांय को एवं यदि पशु में सांय को गर्मी के लक्षण देखें तो अगले दिन सुबह ही गाभिन करवायें। फिर भी यदि गर्भ ना ठहरे तब पशुचिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यदि पशुपालक भाई इन कुछ बातों को ध्यान में रखेंगे तो निश्चित रूप से पुनः–पुनः गर्भाधान की समस्या से निजात पा सकेंगे।

संरक्षण : डा0 राज कुमार सिंह
निदेशक, भ0कृ0अ0प0–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122(उ0प्र0)

मार्गदर्शन: डा0 महेश चन्द्र
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

लेखक : डा. हरेन्द्र कुमार
विभागाध्यक्ष, पशु पुर्नउत्पादन विभाग

संपादन : डा0 रूपसी तिवारी
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ0 प्र0)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क :
आई0वी0आर0आई0 हेल्पलाइन, 0581–2311111
किसान कॉलसेन्टरः 1800–180–1551
आई0 वी0 आर0 आई0 बेवसाइट : www.ivri.nic.in